

## श्री महावीर पूजन

(डॉ. अखिल बंसल कृत)

(दोहा)

महावीर वन्दन करूँ, मैं पूजों धरि ध्यान ।  
निरख आपकी छवि को, होता हर्ष महान ॥  
गुण अनन्त की खान प्रभु, तुम हो समता वान ।  
जो आवे तुम शरण में, करे आत्म कल्याण ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौष्ट ।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

(अष्टक)

मैं हुआ अपावन नाथ, तातें ढिंग आयो ।  
हो जाऊँ पावन आज, निर्मल जल लायो ॥  
तुम हो प्रभु वीर महान, सबके हितकारी ।  
तुम दिया तत्त्व उपदेश, यह जग उपकारी ॥  
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।  
ईर्ष्यानल के अंगार, धक-धक धधक रहे ।  
चन्दन शीतलता लाय, भव आताप हरे ॥ तुम. ॥  
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।  
यह अमल अखण्डित रूप, मुद्रा मोहित है ।  
अक्षत अर्पित है भूप, शुभ्र सुशोभित है ॥ तुम. ॥  
ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।  
मंगल अरुणोदय आज, पुष्प सुगंधित हैं ।  
सब छोड़ूँ काम विकार, सुमन समर्पित हैं ॥ तुम. ॥  
ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।  
बहुविध नैवेद्य बनाय, तृप्ति विहीन रहा ।  
यह क्षुधा रोग विनसाय, जब प्रभु ध्यान धरा ॥ तुम. ॥  
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।  
यह दीप संजोकर लाय, नाशै अंधियारा ।  
मम मोह तिमिर छट जाय, अन्तस उजियारा ॥ तुम. ॥  
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

यह धूप सुगंधित क्षेप, आतम रम जाऊँ ।  
 हो अष्ट करम का क्षार, पंचम गति पाऊँ ॥  
 तुम हो प्रभु वीर महान, सबके हितकारी ।  
 तुम दिया तत्त्व उपदेश, यह जग उपकारी ॥  
 ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 ये इष्ट मिष्ट फल थाल, भरकर मैं लाऊँ ।  
 अर्पित है दीन दयाल, मुक्ति पद पाऊँ ॥ तुम. ॥  
 ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 सब आठों द्रव्य बनाय, मैं प्रभु लावत हूँ ।  
 त्रैलोक्य शिखामणि राय, चरण चढ़ावत हूँ ॥ तुम. ॥  
 ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

### पंचकल्याणक अर्घ्य

षष्ठी शुक्ल अषाढ़ सुशोभै, माता त्रिशला प्रमुदित होवै ।  
 वीर प्रभुजी गरभ विराजे, कुण्डपुर वासी हरषाये ॥  
 ॐ ह्रीं आषाढशुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 चैत्र सुदी तेरस दिन जाये, घर-घर मंगलाचार गुंजाये ।  
 इन्द्र नरेन्द्र सभी मिल गावें, ढोलक ताल मृदंग बजावें ॥  
 ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 मगसिर कृष्ण दशम तप धारा, राजपाट से किया किनारा ।  
 दुद्धर तप हित हेतु विराजे, नाशा दृष्टि मगन जिनराजे ॥  
 ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलमण्डिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 सित दशमी वैशाख जु आए, केवलज्ञान वीर प्रभु पाये ।  
 तीन लोक में खुशियाँ छाई, महाश्रमण अरिहन्त कहाये ॥  
 ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 कार्तिक कृष्ण अमावस आई, वर्द्धमान प्रभु मुक्ति पाई ।  
 नश्वर देह विलीन हुई प्रभु सब मिल जगमग ज्योति जलाई ॥  
 ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलमण्डिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

## जयमाला

(दोहा)

मैं गाऊँ जयमालिका, सुनलो ध्यान लगाय ।  
जग के सब संकट मिटें, भवसागर तिर जाय ॥

(पद्मरि छन्द)

जय महावीर जिनवर महान, जय धीर वीर निर्भीक मान ।  
जय ज्ञान अनन्तानन्त जान, जय सन्मति दायक वर्द्धमान ॥१॥  
तुम सिद्धार्थ नृप के कुमार, तुमको सब वन्दत बार-बार ।  
तुम त्रिशला नन्दन गुण अनन्त, जग तुम्हें मानता दुख हरन्त ॥२॥  
हे नाथ! वैशाली गणनायक, हो विदेह कुण्डपुर प्रतिपालक ।  
यह जग नश्वर है लिया जान, तज राज-पाट फिर किया ध्यान ॥३॥  
सन्मति कैवल्य प्रभावक हो, दुःख भंजक सुख के दायक हो ।  
पतितों के नाथ सहायक हो, तुम प्रभुवर गुण के गाहक हो ॥४॥  
जिनवर ध्वनि गूँजे दिग् दिगन्त, चहुँओर निशा का हुआ अन्त ।  
सद्ज्ञान मिला बढ़ गई आस, ढिंंग बैठ करें श्रुत का अभ्यास ॥५॥  
मृग-सिंह सबको ही हुआ बोध, सम्मुख बैठे तज दिया क्रोध ।  
अब नहीं किसी में बैर-भाव, अतिशयकारी सन्मति प्रभाव ॥६॥  
गौतम को गणधर लिया मान, हो गया जिन्हें कैवल्यज्ञान ।  
पावापुर का जगमग उद्यान, प्रभु महावीर पाया निर्वाण ॥७॥  
सब नृप करते श्रद्धा अपार, अविरल गिरती थी अश्रुधार ।  
रज माथ लगाते बार-बार, अब नहीं जगत में कहीं सार ॥८॥  
यह 'अखिल' जगत शरणागत है, निर्ग्रन्थ छवि को निहारत है ।  
सबको मुक्ति की चाहत है, प्रभु जाप जपै सुख पावत है ॥९॥

(धत्ताछन्द)

महावीर जिनन्दं, आनन्द कन्दं, दुःखनिकन्दं सुखकारी ।  
प्रभु गुण गाऊँ, भाव जगाऊँ, कीर्ति बढ़ाऊँ मनहारी ॥  
ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

महावीर के दर्शन कर, हो गया धन्य मैं आज ।  
'अखिल' जगत सब सुखी हों, वर्द्धमान जिनराज ॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)